RNI No. 38072/81 पोस्टल रजिस्ट्रेशन : आई.आर./जयपुर सिटी/219/2024-26

समन्वय वाणी

सच लिखने का साहस व सलीका

पाक्षिक

129, जादोन नगर 'बी' स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018

ISSN 2456-7086

वर्ष : 46, अंक : 3 जयपुर-1 से 15 फरवरी 2026 (वीर सं. 2552) स्थायी : 1101/- वार्षिक :100/- मूल्य 2/- पृष्ठ : 8

सेवा में,

बारामती प्लेन क्रैश में अजित पवार सहित 6 लोगों की मौत, महाराष्ट्र में लगा राजनीतिक सदमा

महाराष्ट्र के बारामती में बुधवार सुबह (28 जनवरी 2026) एक दिल दहला देने वाला विमान हादसा हुआ है। राज्य के उप-मुख्यमंत्री और एनसीपी नेता अजित पवार को ले जा रहा चार्टर्ड प्लेन लैंडिंग के दौरान क्रैश हो गया। शुरुआती रिपोर्ट्स और आधि-कारिक सूत्रों के अनुसार, इस हादसे में अजित पवार सहित विमान में सवार 6 लोगों की मौत हो गई है। हादसा सुबह करीब 8.45 बजे बारामती एयरपोर्ट पर लैंडिंग की कोशिश के दौरान हुआ। विमान मुंबई से बारामती की ओर जा रहा था, जहाँ अजित पवार जिला परिषद चुनाव प्रचार के लिए कई सभाओं में शामिल होने वाले थे। प्लेन में अजित पवार के अलावा क्रू मेंबर्स और अन्य साथी थे। घटनास्थल पर आग लग गई और धुआं उठता दिखा, जिससे रेस्क्यू ऑपरेशन तुरंत शुरू हुआ।

देश के हर व्यक्ति तक पहुंचने की कोशिश की : मोदी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि हमारी सरकार ने देश के हर व्यक्ति तक पहुँचने की कोशिश की है। कोई भी स्कीम हो, उसे समाज के आखिरी व्यक्ति तक पहुँचाया गया है। यह बात तो हमें नापसंद करने वाले भी मानते हैं कि इस सरकार ने आखिरी व्यक्ति तक पहुँचने की कोशिश की है। संसद के बजट सत्र के दूसरे दिन 29 जनवरी को मीडिया से चर्चा में प्रधानमंत्री कहा कि हमारी सरकार की पहचान रही है - रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म। अब हम रिफॉर्म एक्सप्रेस पर चल पड़े हैं। बजट सत्र को लेकर प्रधानमंत्री ने कहा, 'यह दूसरे क्वाटर का पहला बजट है। निर्मला सीतारमण पहली महिला वित्त मंत्री हैं, जो लगातार 9वीं बार बजट पेश करने जा रही हैं। यह गौरव का पल है।' उन्होंने कहा कि 2047 विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अहम 25 वर्षों की शुरुआत हो चुकी है। **देश लॉन्गटर्म सॉल्यूशन के मार्ग पर बढ़ चुका है** - मोदी ने कहा, 'देश लॉन्गटर्म पेंडिंग प्रॉब्लम से निकलकर लॉन्गटर्म सॉल्यूशन के मार्ग पर है और मजबूती के साथ कदम रख रहा है। हमारे सारे फैसले ह्यूमन सेंट्रिक होते हैं।' उन्होंने कहा कि भारत-ईयू का करार इसकी झलक है कि आने वाली दिशाएँ कितनी उज्ज्वल हैं।

रेलवन एप से टिकट लेने पर 3 प्रतिशत की छूट

जयपुर : यात्रियों को सहूलियत देने के लिए रेलवे ने नई व्यवस्था शुरू की है। जिसके तहत रेलवे द्वारा रेलवन एप से जनरल टिकट खरीदने वाले यात्रियों को किराए में 3 प्रतिशत डिस्काउंट दिया जाएगा। रेलवे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह छूट रेलवन एप पर आर-वॉलेट को छोड़कर अन्य सभी डिजिटल भुगतान माध्यमों से अनारक्षित टिकट बुक करने पर लागू होगी। अभी ट्रायल के तौर पर इस एप से जनरल टिकट लेने पर डिस्काउंट 14 जुलाई तक दिया जाएगा।

राजकीय सम्मान के साथ अजित पवार का अंतिम संस्कार

बारामती : महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम रहे अजित पवार का 29 जनवरी को उनके गृह नगर बारामती में राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। उनके पार्थिव शरीर को गांव काटेवाडी से विद्या प्रतिष्ठान ग्राउंड ले जाया गया। जहाँ एक बड़ा जनसमूह अंतिम विदाई देने के लिए मौजूद था। केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन, नितिन गडकरी, शरद पवार मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस समेत केन्द्र सरकार और कई राज्यों के बड़े नेताओं ने उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की। बेटे जय और पार्थ ने पिता की चिता को मुखाग्नि दी। स्मरण रहे कि 28 जनवरी को बारामती एयरपोर्ट पर लैंडिंग के दौरान चार्टर्ड विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से अजीत पवार समेत पांच लोगों की मृत्यु हो गई थी। एनसीपी मंत्री बोले - हमें एकजुट रहना होगा...अजित पवार की मृत्यु के बाद अब एनसीपी और एनसीपी एसपी के विलय पर भी चर्चा छिड़ गई है। एनसीपी नेता और मंत्री नरहरि झिरवाल ने इस बाबत् कहा है कि बिखरे रहने का कोई मतलब नहीं है। हमें एकजुट रहना होगा।

सुनेत्रा पवार बन सकती हैं उत्तराधिकारी

अजित पवार के आकस्मिक निधन के बाद एनसीपी में उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी को लेकर संकेत मिल रहे हैं। उनकी पत्नी सुनेत्रा पवार को एनसीपी कोटे से महाराष्ट्र का डिप्टी सीएम बनाने को लेकर महायुति में प्रस्ताव दिया जा सकता है। सूत्रों के अनुसार एनसीपी के कार्यकारी अध्यक्ष प्रफल्ल पटेल और वरिष्ठ नेता छगन भुजबल ने सुनेत्रा से मुलाकात कर उनसे डिप्टी सीएम बनने का आग्रह किया है। सुनेत्रा 2024 से राज्यसभा की सांसद है।

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय

समन्वय वाणी में प्रकाशित लेखों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं।

यूजीसी का विरोध : आज की हकीकत

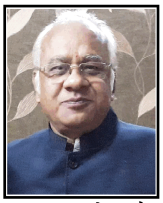

नई शिक्षा नीति, डिजिटल विश्वविद्यालयों और ऑनलाइन डिग्रियों के विस्तार के बीच विश्वविद्यालय अनुदान आयोग यानी यूजीसी एक बार फिर बहस के केंद्र में है। देशभर के विश्वविद्यालय परिसरों और सोशल मीडिया पर उठ रहा विरोध यह संकेत देता है कि असंतोष केवल नीतियों से नहीं, बल्कि व्यवस्था से उपजे भरोसे के संकट से जुड़ा है। आज यूजीसी के विरोध का प्रमुख कारण नियुक्तियों में देरी और रोस्टर व्यवस्था है। विशेषकर सवर्ण समाज – ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ग – यह अनुभव कर रहा है कि वर्षों की अकादमिक तैयारी के बावजूद अवसर सीमित होते जा रहे हैं। बड़ी संख्या में पद रिक्त हैं, अस्थायी नियुक्तियाँ बढ़ रही हैं और चयन प्रक्रियाएँ लंबी होती जा रही हैं। निजी क्षेत्र में रोजगार की अनिश्चितता ने इस असंतोष को और तीखा बना दिया है। यह आज की स्थिति का नग्न सत्य है। परंतु इसी के साथ एक भ्रम भी तेज़ी से फैलाया जा रहा है कि यूजीसी अप्रासंगिक हो चुकी है या समाप्त की जा रही है। यह तथ्यात्मक रूप से गलत है। फर्जी विश्वविद्यालयों, अमान्य ऑनलाइन डिग्रियों और शिक्षा के बढ़ते बाजारीकरण के इस दौर में यूजीसी की आवश्यकता पहले से अधिक है। बिना नियमन के उच्च शिक्षा गुणवत्ता के बजाय अराजकता की ओर बढ़ेगी।

यूजीसी आज दो दबावों के बीच खड़ी है। एक ओर योग्यता और अवसर की माँग है, दूसरी ओर सामाजिक न्याय की संवैधानिक बाध्यता। समस्या तब पैदा होती है, जब इन दोनों के बीच संवाद का पुल टूट जाता है। आदेशात्मक निर्देश और अस्पष्ट नियम न केवल शिक्षकों को, बल्कि छात्रों को भी असमंजस में डाल रहे हैं। आज का सवाल यह नहीं है कि यूजीसी सही है या गलत। असली सवाल यह है कि क्या वह आज की सामाजिक और शैक्षणिक वास्तविकताओं के अनुरूप स्वयं को ढाल पा रही है? विरोध को अनसुना करना उतना ही खतरनाक है, जितना अफ़वाहों के आधार पर संस्था को कटघरे में खड़ा करना।

समाधान टकराव में नहीं, विस्तार में है – नए विश्वविद्यालय, अधिक शैक्षणिक पद, पारदर्शी चयन और समयबद्ध भर्तियाँ। सीमित अवसरों के भीतर न्याय खोजने की कोशिश समाज को और बाँटेगी।

यूजीसी का विरोध तभी सार्थक होगा, जब वह आज की हकीकत से जुड़ा हो। अन्यथा सच और झूठ के बीच भटकता यह विवाद उच्च शिक्षा को ही सबसे बड़ा नुकसान पहुँचा देगा। – **डॉ. अखिल बंसल**

जहाँ बाधा और संघर्ष नहीं, वहाँ सफलता और मंजिल नहीं

झालरापाटन : पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने कहा है बिरसा मुंडा हमें प्रेरणा देते हैं कि बाधाओं के कांटों पर ही सफलता के मचान हैं। जहाँ बाधा और संघर्ष नहीं, वहाँ सफलता और मंजिल नहीं। उन्होंने कहा भील समाज संघर्ष का समाज है। अभावों में जीकर सफलता की कहानियाँ लिखना भील समाज को अच्छे से आता है। वे 29 जनवरी को बिरसा मुंडा मूर्ति अनावरण, बैडमिंटन कोर्ट उद्घाटन और विभिन्न निर्माण कार्यों के उद्घाटन व शिलान्यास कार्यक्रम में बोल रही थीं। उन्होंने कहा कि बिरसा मुंडा ने धर्मांतरण के खिलाफ आवाज उठाई। उनके जीवन से हमें अन्याय के खिलाफ लड़ने और प्रकृति की रक्षा करने की प्रेरणा मिलती है।

ललित गर्ग 'पत्रकार शिरोमणि' सम्मान से अलंकृत होंगे

नई दिल्ली, वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार एवं सामाजिक चिंतक ललित गर्ग को उनके चार दशकों से अधिक समय से जारी सृजनात्मक, मूल्यनिष्ठ और जनसरोकारों से जुड़े पत्रकारिता योगदान के लिए 'पत्रकार शिरोमणि' सम्मान से सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान जैन दर्शन, साहित्य और सामाजिक चेतना को समर्पित एक प्रतिष्ठित संस्था 'श्रुतसेवा निधि न्यास' के द्वारा 8 फरवरी 2026 को उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद में फिरोजाबाद क्लब लिमिटेड के सुसज्जित ऑडिटोरियम में आयोजित अक्षराभिषेक उत्सव समारोह में प्रदान किया जाएगा। न्यास के महामंत्री श्री अमित कुमार जैन ने बताया कि न्यास का श्रीमती शांतिदेवी गुप्त श्रुतसेवा अलंकरण के अंतर्गत 'पत्रकार शिरोमणि' के रूप में श्री गर्ग को 25000/- रुपये की नगद राशि, सम्मान-पत्र, शॉल, माला, प्रशस्ति पत्र एवं साहित्य प्रदत्त किया जाएगा। इस समारोह में देश के विभिन्न हिस्सों से पत्रकार, साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं समाजसेवी कार्यकर्ता सहभागिता करेंगे। समारोह का उद्देश्य साहित्य एवं पत्रकारिता के मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका को रेखांकित करना है। ललित गर्ग पिछले 40 वर्षों से पत्रकारिता, साहित्य एवं लेखन के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं और राजधानी दिल्ली के एक विशिष्ट एवं सम्मानित बौद्धिक व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं। उन्होंने निर्भीक, विचारोत्तेजक और मूल्यपरक लेखन के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय मुद्दों पर जनचेतना को दिशा दी है। अब तक उन्होंने अनेक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं का संपादन किया है तथा उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री गर्ग विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। वर्तमान में वे सूर्यनगर एजुकेशनल सोसाइटी के कार्यकारी अध्यक्ष तथा सुखी परिवार फाउंडेशन के अध्यक्ष हैं। सुखी परिवार फाउंडेशन के माध्यम से गुजरात सहित विभिन्न क्षेत्रों में आदिवासी कल्याण, सामाजिक सशक्तिकरण और पारिवारिक मूल्यों से जुड़ी अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से भी लंबे समय से जुड़े रहे हैं और राष्ट्रवादी विचारधारा, सांस्कृतिक चेतना एवं सामाजिक समरसता को अपने लेखन और जीवन-कार्य के माध्यम से अभिव्यक्त करते आए हैं। आयोजक संस्था के पदाधिकारियों के अनुसार, ललित गर्ग को यह सम्मान उनकी सैद्धांतिक पत्रकारिता, साहित्यिक योगदान और सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए प्रदान किया जा रहा है। समारोह को लेकर पत्रकारिता जगत एवं साहित्यिक क्षेत्र में विशेष उत्साह देखा जा रहा है।- **बरुण कुमार सिंह**

किसी का दिल दुखाना, तोड़ना भी हिंसा : वसुंधरा

जयपुर : राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा- जैन धर्म अहिंसा पर आधारित है, किसी भी जीव, प्राणी के जीवन को नुकसान पहुँचाना हिंसा मानी गई है। हथियार से हिंसा करना या किसी को मारना-पीटना ही हिंसा नहीं है, किसी का दिल दुखाना और किसी का दिल तोड़ना भी हिंसा है। राजनीति में अक्सर ऐसा होता है। राजनीति में दिल तोड़े भी जाते हैं और दिल दुखाए भी जाते हैं। वसुंधरा राजे 26 जनवरी को डीडवाना-कुचामन जिले के छोटी खाटू में आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव में बोल रही थीं।

Created by Universal Document Converter

बढ़ते मंदिर, सिमटता समाज : आत्ममंथन का समय

▣ अरविंद जैन 'बीमा', उज्जैन

आज जैन समाज एक गंभीर और चिंताजनक दौर से गुजर रहा है। जनसंख्या के दृष्टिकोण से देखें तो जैन समाज देश के सबसे छोटे अल्पसंख्यक समुदायों में से एक बन चुका है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार पारसी समाज (0.006 प्रतिशत) के बाद जैन समाज की जनसंख्या मात्र लगभग 0.4 प्रतिशत रह गई है। यह स्थिति तब और अधिक पीड़ादायक हो जाती है जब हम यह देखते हैं कि जैन समाज देश में सबसे अधिक राजस्व, कर, समाजसेवा, गौशाला संचालन और परोपकारी संस्थाओं का संचालन करने वाला समाज है।

शहरी क्षेत्रों में आज भी जैन मंदिरों की संख्या प्रचुर मात्रा में है, किंतु विडंबना यह है कि जैन समाज स्वयं शहरों के पुराने क्षेत्रों को छोड़कर दूरस्थ कॉलोनियों में बसता जा रहा है। परिणामस्वरूप अनेक प्राचीन एवं ऐतिहासिक जैन मंदिर वीरान होते जा रहे हैं। दर्शनार्थियों का अभाव बढ़ रहा है और उनकी देखरेख एवं सुरक्षा भी एक गंभीर प्रश्न बनती जा रही है।

चिंता का विषय यह भी है कि समाज की घटती जनसंख्या के बावजूद विभिन्न स्थानों पर विशाल और भव्य नए मंदिरों के निर्माण की प्रेरणा निरंतर दी जा रही है। इन मंदिरों में सोना-चांदी एवं बहुमूल्य सामग्री का अत्यधिक उपयोग किया जाता है, जबकि भविष्य में इन मंदिरों में श्रद्धालुओं की संख्या और सुरक्षा व्यवस्था दोनों ही अनिश्चित दिखाई देती हैं। इतिहास साक्षी है कि एक समय मंदिरों की संपत्ति लूटी गई थी—क्या भविष्य में ऐसी परिस्थितियाँ दोबारा नहीं बन सकतीं? इस पर गंभीर चिंतन आवश्यक है।

आज की युवा पीढ़ी उच्च शिक्षा, करियर और विदेशों में बसने की आकांक्षा के कारण मंदिरों एवं धार्मिक गतिविधियों से धीरे-धीरे दूर होती जा रही है। इसके साथ ही कम उम्र में वैराग्य की ओर प्रेरणा, देर से विवाह, एक या शून्य संतान की प्रवृत्ति तथा लड़कियों का अंतर्जातीय प्रेम विवाह भी जैन समाज की जनसंख्या को और संकुचित कर रहे हैं।

समय की मांग है कि नए मंदिरों के निर्माण से पहले प्राचीन मंदिरों के संरक्षण, सुरक्षा एवं पुनर्जीवन पर ध्यान दिया जाए। गत वर्ष मुंबई में एक जैन मंदिर तोड़ने की घटना हो चुकी है। इसी प्रकार दिल्ली में पर्यूषण पर्व के दौरान एक मांसाहारी अल्पसंख्यक समुदाय द्वारा पूजा कार्य में विघ्न उत्पन्न किया गया था।

यदि आवश्यकता हो तो उपेक्षित मंदिरों की प्रतिमाओं को सक्रिय मंदिरों में विधिपूर्वक विराजमान किया जाए। भगवान को सोना-चांदी से मढ़े भव्य मंदिरों की नहीं, बल्कि सच्ची श्रद्धा, भक्ति और सदाचार की आवश्यकता होती है—यही जैन दर्शन का मूल संदेश है।

इसके साथ ही जैन समाज का दिगंबर, श्वेतांबर एवं अन्य पंथों में बिखराव भी भविष्य के लिए चिंताजनक है। संतों के आवागमन, जलसों एवं विधानों में होने वाला अत्यधिक खर्च भी आत्मचिंतन की मांग करता है। सभी पंथों में एकता, समन्वय और सहयोग आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

किसी भी समाज की मांगों की सुनवाई तभी होती है जब उसके पीछे जनसंख्या और संगठित नेतृत्व का दबाव हो। दुर्भाग्यवश आज राजनीति में जैन समाज का प्रतिनिधित्व लगभग समाप्त प्राय: हो गया है। समाज के जिस भी व्यक्ति में नेतृत्व क्षमता हो, उसे सभी पंथों द्वारा एकमत होकर आगे बढ़ाया जाना चाहिए।

आवश्यक है कि बच्चों में बचपन से देव-दर्शन, संस्कार और धार्मिक जुड़ाव विकसित किया जाए। साथ ही युवा दंपतियों को अधिक संतानों के लिए प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षा, चिकित्सा और आर्थिक सहयोग की योजनाएँ समाज स्तर पर बनाई जाएँ। मिशनरी संस्थाओं की भांति जैन समाज को भी जैन विद्यालयों एवं शिक्षण संस्थानों की स्थापना पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जिससे संख्या के साथ संस्कार भी सुरक्षित रहें।

साधु-संतों से विनम्र निवेदन है कि वे युवा पीढ़ी को कम आयु में वैराग्य की ओर प्रेरित करने के बजाय उन्हें पहले पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों के निर्वहन का अवसर प्रदान करें। प्रौढ़ अवस्था में वैराग्य का मार्ग अधिक संतुलित और समाजोपयोगी सिद्ध हो सकता है।

हमारे पूर्वजों के समय 8-9 भाई-बहन सामान्य बात थी, किंतु आज एकल संतान या नि:संतान जीवन को प्राथमिकता दी जा रही है। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले वर्षों में जैन समाज के विलुप्त होने की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता। तब हमारे मंदिर, धर्मशालाएँ और संस्थाएँ दूसरों के अधीन चली जाएंगी, यह विचार ही अत्यंत पीड़ादायक है।

यह लेख किसी पर आरोप नहीं, बल्कि समाज के प्रति पीड़ा, चिंता और आत्ममंथन की पुकार है। समय रहते यदि हमने दिशा नहीं बदली, तो भविष्य हमें क्षमा नहीं करेगा।

सभी साधु-संतों एवं समाज के प्रबुद्धजनों के चरणों में सादर वंदन करते हुए यही प्रार्थना है कि वे जैन समाज को संरक्षण, संतुलन और संवर्धन का सही मार्ग दिखाएं।

राजीव जैन उत्कृष्ट सेवा मेडल से सम्मानित

जबलपुर शहर के गौरव Rajiv Jain, महाराष्ट्र कैडर के आईपीएस और मुंबई में इंस्पेक्टर जनरल पद पर कार्यरत हैं, उन्हें कल राष्ट्रपति उत्कृष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किए जाने का ऐलान किया गया है। राजीव जी ने अपने करियर के शुरुआती वर्षों के दौरान नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में काफ़ी काम किया। महाराष्ट्र सरकार ने उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए उनका नाम राष्ट्रपति पदक के लिए प्रस्तावित किया और कल उन्हें उत्कृष्ट सेवा का राष्ट्रपति पदक देने का निर्णय लिया गया। उनके पिता श्री वी.के. जैन भी पुलिस अधिकारी रहे हैं और उनका छोटा भाई संजीव जैन भी एमपी के आबकारी विभाग में अधिकारी हैं।

Created by Universal Document Converter

वैशाली : विश्व गणतंत्र की प्रथम पाठशाला

▣ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

भारत का गणतंत्र केवल 26 जनवरी 1950 से जुड़ी एक संवैधानिक घटना नहीं है, बल्कि यह हमारी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति और राजनीतिक चेतना की सहस्राब्दियों पुरानी यात्रा का जीवंत प्रमाण है। आज जब भारत 77वां गणतंत्र दिवस मना रहा है, तब यह स्मरण करना अत्यंत आवश्यक है कि लोकतांत्रिक गणतंत्र की अवधारणा का प्रथम प्रकाश इसी पुण्य भूमि भारत से उदित हुआ था।

वैशाली : विश्व का प्रथम गणराज्य

ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार दुनिया का पहला गणराज्य वैशाली था, जो वर्तमान बिहार राज्य में स्थित था। ईसा से लगभग 2600 वर्ष पूर्व वैशाली में स्थापित गणतांत्रिक व्यवस्था ने संपूर्ण विश्व को लोकतंत्र का मार्ग दिखाया। यह नगर वज्जी महाजनपद की राजधानी था और यहाँ लिच्छवी गणराज्य का संचालन होता था।

आज जिन उच्च सदन और निम्न सदन की व्यवस्थाओं को आधुनिक लोकतंत्र की पहचान माना जाता है, उनका प्रारंभिक स्वरूप भी वैशाली गणराज्य में देखने को मिलता है। यहाँ छोटी-छोटी समितियां गठित थीं, जो जनता के हित में नियम और नीतियाँ निर्धारित करती थीं।

भारत : लोकतंत्र की जननी : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए कहा था कि 'भारत लोकतंत्र की जननी है।' यह कथन केवल भावनात्मक गर्व नहीं, बल्कि ऐतिहासिक सत्य पर आधारित है। भारत में लोकतंत्र कोई आयातित विचार नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की आत्मा रहा है।

यूरोप और अमेरिका की आधुनिक लोकतांत्रिक प्रणालियाँ भी मूल रूप से उन्हीं सिद्धांतों को अपनाती हैं, जिनका प्रयोग वैशाली में सदियों पहले किया गया था। इसी कारण कुछ इतिहासकार वैशाली को 'गणतंत्र का मक्का' भी कहते हैं।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक वैभव की धरा : वैशाली

वैशाली केवल राजनीतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक और कलात्मक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध रही है। यहाँ के चेचर (श्वेतपुर) क्षेत्र से प्राप्त मूर्तियाँ और सिक्के इसके पुरातात्त्विक महत्त्व को प्रमाणित करते हैं। वैशाली अपने उत्कृष्ट हस्तशिल्प के लिए भी विख्यात रही है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने वैशाली की गरिमा को इन शब्दों में नमन किया है –

वैशाली जन का प्रतिपालक,
विश्व का आदि विधाता।
जिसे ढूंढता विश्व आज,
उस प्रजातंत्र की माता॥
रुको एक क्षण पथिक,
इस मिट्टी पे शीश नवाओ।
राज सिद्धियों की समाधि पर
फूल चढ़ाते जाओ।

महावीर, बुद्ध और वैशाली : वैशाली जैन और बौद्ध परंपरा का अत्यंत पावन केंद्र है। यह भगवान महावीर की जन्मभूमि है और भगवान बुद्ध का यहाँ तीन बार आगमन हुआ।

प्राचीन गणतंत्र 'वैशाली' और महावीर स्वामी : विश्व को सर्वप्रथम गणतंत्र का पाठ पढ़ने वाला स्थान वैशाली ही है। आज वैश्विक स्तर पर जिस लोकतंत्र को अपनाया जा रहा है वह यहाँ के लिच्छवी शासकों की ही देन है। लगभग छठी शताब्दी ईसा पूर्व नेपाल की तराई से लेकर गंगा के बीच फैली भूमि पर वज्जियों तथा लिच्छवियों के संघ (अष्टकुल) द्वारा गणतांत्रिक शासन व्यवस्था की शुरुआत की गयी थी। यहाँ का शासक जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चुना जाता था।

दरअसल वैशाली नगर वज्जी महाजनपद की राजधानी थी। महाजनपद का मतलब प्राचीन भारत के शक्तिशाली राज्यों में से एक होता था। ये क्षेत्र प्रभावशाली था अपने गणतांत्रिक मूल्यों की वजह से। वैशाली गणराज्य को लिच्छवियों ने खड़ा किया था।

ऐतिहासिक साहित्य से ज्ञात होता है कि भगवान महावीर के काल में अनेक गणराज्य थे। तिरहुत से लेकर कपिलवस्तु तक गणराज्यों का एक छोटा सा गुच्छा गंगा से तराई तक फैला हुआ था। गौतम बुद्ध शाक्यगण में उत्पन्न हुए थे। लिच्छवियों का गणराज्य इनमें सबसे शक्तिशाली था, उसकी राजधानी वैशाली थी। लिच्छवी संघ नायक महाराजा चेटक थे। महाराजा चेटक की ज्येष्ठ पुत्री का नाम 'प्रियकारिणी त्रिशला' था जिनका विवाह वैशाली गणतंत्र के सदस्य एवं क्षत्रिय 'कुण्डग्राम' के अधिपति महाराजा सिद्धार्थ के साथ हुआ था और इन्हीं के यहाँ 599 ईसापूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन बालक वर्धमान (महावीर स्वामी) का जन्म वज्जि-कुल में हुआ जिसने अनेकान्त-स्याद्वाद सिद्धांत के माध्यम से पूरे विश्व को अच्छे लोकतंत्र की शिक्षा प्रदान कर एक नई दिशा प्रदान की।

भगवान महावीर के सिद्धांत, शिक्षाएँ, संविधान आज भी अत्यंत समीचीन और प्रासंगिक हैं।

गणतंत्र दिवस हमारे संविधान में संस्थापित स्वतंत्रता, समानता, एकता, भाईचारा और सभी भारत के नागरिकों के लिए न्याय के सिद्धांतों को स्मरण और उनको मजबूत करने का एक उचित अवसर है, क्योंकि हमारा संविधान ही हमें अभिव्यक्ति की आजादी देता है।

वैशाली गणराज्य और आधुनिक गणतंत्र – वैशाली गणराज्य में शासन जनता के प्रतिनिधियों द्वारा संचालित होता था। उस समय के 'गण' आज के पार्षदों, विधायकों और सांसदों के समान थे। लोग अपनी समस्याएँ गणों तक पहुँचाते थे और वे गण-सभा में जनहित के निर्णय लेते थे।

आज के गणतंत्र और वैशाली के गणराज्य में भले ही संरचनात्मक अंतर हो, परंतु मूल विचार-जनसहभागिता, प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व वही है।

वैश्विक समाज के लिए प्रेरणादायक भारतीय लोकतंत्र – लोकतंत्र आज केवल शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन बन चुका है। सहभागिता, पारदर्शिता, समानता, बंधुता और जवाबदेही इसके मूल तत्त्व हैं। भारत की त्रिस्तरीय शासन प्रणाली और विकेंद्रीकरण की अवधारणा इसे और अधिक सशक्त बनाती है।

हमारे पूर्वजों ने जो लोकतांत्रिक विरासत हमें सौंपी है, उसे सुरक्षित रखना और भावी पीढ़ी तक पहुँचाना हम सभी का नैतिक दायित्व है।

गणतंत्र दिवस, संकल्प का पर्व – गणतंत्र दिवस हमें संविधान में निहित स्वतंत्रता, समानता, न्याय, एकता और भाईचारे के मूल्यों को स्मरण कराने का अवसर देता है। इस पावन अवसर पर प्रत्येक नागरिक को संविधान और गणतंत्र के प्रति अपनी वचनबद्धता दोहरानी चाहिए तथा शिक्षा, सद्भाव और पारदर्शिता को सुदृढ़ करने का संकल्प लेना चाहिए। अगर देश के नागरिक संविधान में प्रतिष्ठापित बातों का अनुसरण करेंगे तो इससे देश में अधिक लोकतांत्रिक मूल्यों का उदय होगा।

Created by Universal Document Converter

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

77वें

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी

के पावन पर्व पर समस्त प्रदेशवासियों को

हार्दिक शुभकामनाएँ

राज्य स्तरीय मुख्य समारोह

26 जनवरी, 2026 | प्रातः 9:30 बजे | सवाई मानसिंह स्टेडियम, जयपुर

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

"प्रदेशवासियों को **77 वें गणतंत्र दिवस** के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। देशभर में 'वंदे मातरम' राष्ट्र गीत के 150 वर्ष पूर्ण होने पर उत्सव भी मनाए जा रहे हैं। आइए, इस अवसर पर हम विकसित भारत की दिशा में कदम से कदम मिलाते हुए समृद्ध राजस्थान का निर्माण करें। जय हिन्द!"

भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री, राजस्थान

Created by Universal Document Converter

प्रथम गणतंत्र दिवस रोचक बातें

– इंजी. अतिवीर जैन 'पराग', मेरठ

गणतंत्र दिवस की पहली परेड 26 जनवरी 1950 को दिल्ली में इरवीन एमफीथियेटर स्टेडियम से राष्ट्रपति भवन तक निकाली गई थी, इस स्टेडियम को वर्तमान में मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम कहा जाता है। इस परेड में तत्कालीन इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकरर्णो मुख्य अतिथि थे और डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने इस दिन राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद को राष्ट्रपति बनाने के लिए 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा के विशेष सत्र का आयोजन किया गया था और उन्हें सर्वसम्मति से भारतीय गणराज्य का राष्ट्रपति चुना गया था। डॉ. राजेंद्र प्रसाद घोड़ा गाड़ी में राष्ट्रपति भवन से इरवीन एमफीथियेटर स्टेडियम तक आए थे। इन्होंने पहले राष्ट्रपति पद की शपथ ली उसके बाद राष्ट्रीय ध्वज फहराया। राष्ट्रपति को 21 तोपों की सलामी दी गई थी। 3000 सैनिकों ने परेड में भाग लिया था। जिसका नेतृत्व राष्ट्रपति ने स्वयं घोड़ा गाड़ी में किया था। वायु सेना के विमानों ने भी आसमान में अपने करतब दिखाए थे। सन् 1950 से 1954 तक गणतंत्र दिवस का समारोह किंग्सवे कैंप जिसे आज राजपथ या कर्तव्य पथ कहा जाता है, लाल किला मैदान और रामलीला मैदान में बनाए जाते रहे। सन् 1955 से यह स्थाई रूप से राजपथ जिसे अब कर्तव्य पथ कहते हैं, पर मनाया जाता है। 26 नवंबर 1949 को संविधान पूर्ण हो गया था और संविधान सभा में पास हो गया था। जिसको कि 26 जनवरी 1950 से लागू किया गया और भारत एक संपूर्ण गणतंत्र हो गया और यह संविधान भारत पर लागू हो गया। सन् 2015 से भाजपा सरकार आने के बाद 26 नवंबर को प्रतिवर्ष संविधान दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है। संविधान को प्रेम बिहारी नारायण रायजादा ने अपने हाथ से लिखा था और इसकी कोई फीस नहीं ली थी, पर एक शर्त रखी थी जिसके अनुसार संविधान के हर पन्ने पर उनका नाम लिखा हुआ है और आखिरी पन्ने पर उनके दादाजी के नाम के साथ उनका नाम लिखा हुआ है। संविधान की यह मूल पांडुलिपि आज भी संसद भवन में सुरक्षित है।

सांसद नवीन जैन द्वारा केन्द्रीय कारागार सागर के हथकर्घा केन्द्र का अवलोकन

सागर : भारतीय जनता पार्टी द्वारा आयोजित जैन धर्म के सर्वोच्च संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के द्वितीय समाधि स्मृति दिवस के अवसर कार्यक्रम के क्रम में मध्य प्रदेश के जिला सागर के केंद्रीय कारागार पहुँच कर सांसद नवीन जैन ने आचार्य श्री की प्रेरणा से शुभारम्भ हुआ विद्यासागरजी महाराज हथकरघा प्रशिक्षण केंद्र का अवलोकन कर मौजूद कैदियों से वार्ता की। आचार्य श्री की प्रेरणा से लगभग 150 से अधिक विभिन्न स्थानों पर हथकरघा के माध्यम से व्यक्ति स्वावलंबी हो रहे हैं और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प में अपना भागीदारी सुनिश्चित कर रहें हैं। यह हथकरघा के माध्यम पूर्ण रूप से अहिंसक वस्त्र होने के साथ साथ त्वचा रोग से भी बचाव के साथ स्वदेशी भावना की सिद्धि होती है। इस अवसर पर विधायक शैलेंद्र जैन, जिला कारागार अधीक्षक मनोज मिश्रा जी, हरिओम जी, रेखा दीदी जी, नीलम दीदी जी, मुकेश जैन जी ढाना सहित अन्य प्रमुख लोग मौजूद रहे।

राजस्थान के राजेश कुमार फंस गए बंगाल के अंदर डीजीपी की जंग में

– महेश झालानी, जयपुर

बंगाल के पुलिस महकमे में इस वक्त जो हलचल है, वह किसी बड़े प्रशासनिक संकट की आहट जैसी महसूस होती है। दरअसल, राज्य के अगले पुलिस महानिदेशक की नियुक्ति का मामला अब केवल फाइलों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक ऐसी त्रिकोणीय जंग बन गया है जिसमें एक तरफ राज्य सरकार की मर्जी है, दूसरी तरफ केंद्रीय जांच एजेंसियों के नियम और तीसरी तरफ अदालती आदेशों की तलवार।

इस पूरे विवाद के केंद्र में दो बड़े नाम हैं, वर्तमान कार्यवाहक डीजीपी राजीव कुमार और अपनी दावेदारी के लिए कानूनी लड़ाई लड़ रहे 1990 बैच के आईपीएस राजेश कुमार। पूरे मामले की खोजबीन करें तो पता चलता है कि यह विवाद उस वक्त गहराया जब राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट के पुराने दिशा-निर्देशों को दरकिनार करते हुए करीब एक साल से ज्यादा समय तक राजीव कुमार को 'कार्यवाहक' पद पर बनाए रखा। राजेश कुमार झुंझुनू जिले के गांव मुकुंदगढ़ के मूल निवासी है ।

नियम कहते हैं कि डीजीपी की नियुक्ति के लिए नामों का पैनल पद खाली होने के तीन महीने पहले ही यूपीएससी को भेज देना चाहिए, लेकिन बंगाल सरकार ने इसमें डेढ़ साल की देरी कर दी। जब जुलाई 2025 में लिस्ट भेजी गई, तो यूपीएससी ने उसे यह कहकर लौटा दिया कि इतनी बड़ी देरी के बाद अब मामला बिना सुप्रीम कोर्ट के स्पष्टीकरण के आगे नहीं बढ़ सकता।

यहीं से राजेश कुमार की भूमिका अहम हो जाती है। राजस्थान के निवासी और अनुसूचित जाति से ताल्लुक रखने वाले राजेश कुमार ने महसूस किया कि वरिष्ठता सूची में ऊपर होने के बावजूद उन्हें इस पूरी प्रक्रिया में नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (कैट) का दरवाजा खटखटाया और वहाँ से एक ऐसा आदेश हासिल किया जिसने पूरे सिस्टम को हिला दिया। कैट ने न केवल राजेश कुमार के नाम पर विचार करने को कहा, बल्कि PSC को 29 जनवरी तक चयन प्रक्रिया पूरी करने की कड़ी डेडलाइन भी दे दी।

कहानी में असली ट्विस्ट तब आया जब यूपीएससी ने इस डेडलाइन को मानने के बजाय दिल्ली हाईकोर्ट का रुख कर लिया। यूपीएससी का तर्क बेहद गंभीर है। उसका कहना है कि किसी संवैधानिक संस्था को इस तरह समय सीमा में बांधकर काम करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, खासकर तब जब राज्य सरकार ने खुद नियमों की अनदेखी की हो। अब स्थिति यह है कि 31 जनवरी को राजीव कुमार का कार्यकाल खत्म हो रहा है, उनका विदाई समारोह भी हो चुका है, लेकिन बंगाल पुलिस का अगला मुखिया कौन होगा, इसका जवाब दिल्ली हाईकोर्ट के गलियारों में अटका हुआ है।

खोजपूर्ण नजरिए से देखें तो यह मामला केवल एक नियुक्ति का नहीं, बल्कि इस बात का उदाहरण है कि कैसे प्रशासनिक देरी और आपसी खींचतान किसी राज्य की कानून-व्यवस्था के शीर्ष पद को अनिश्चितता के भंवर में डाल सकती है। अगर हाईकोर्ट से जल्द हरी झंडी नहीं मिली, तो बंगाल को 1 फरवरी से एक बार फिर किसी अस्थायी व्यवस्था के सहारे चलना होगा, जो न तो प्रशासन के लिए अच्छा है और न ही कानून की नजर में सही।

Created by Universal Document Converter

जयपुर में राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026 का भव्यता पूर्ण आयोजन : डॉ. अखिल बंसल व अन्य सम्मानित

जयपुर : देशभर में सामाजिक सेवा और उत्कृष्ट योगदान को सम्मानित करने वाला प्रतिष्ठित 'राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026 (Rashtriya Gaurav Puraskar 2026)' का आयोजन 26 जनवरी को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर (RIC), जयपुर में भव्य एवं गरिमामय रूप में आयोजित किया गया। इस राष्ट्रीय स्तर के सम्मान समारोह में देश के विभिन्न राज्यों से चयनित उन विशिष्ट व्यक्तित्वों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने शिक्षा, सामाजिक सेवा, स्वास्थ्य, प्रशासन, कला, संस्कृति, नवाचार और राष्ट्र निर्माण व मीडिया के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए हैं। आयोजक संस्था YSS India के अध्यक्ष श्री कमल चौधरी ने जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार का उद्देश्य उन कर्मठ नागरिकों को सम्मान देना है, जो अपने कार्यों से समाज और देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बने हैं। यह मंच केवल सम्मान का नहीं, बल्कि सकारात्मक सोच, सेवा और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को सशक्त करने का माध्यम है। Yss के मीडिया प्रभारी जर्नलिस्ट डॉ. अखिल बंसल के अनुसार कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथियों में जस्टिस एन.के.जैन, आईपीएस अनिल जैन, ग्रुप कैप्टन रि.आर. सी. त्रिपाठी, रि. कैप्टन सुखराम यादव, सी. आई.हरेन्द्र सिंह राज. पुलिस, लै.क.शीतलकृष्ण गायकवाड, रि. आर्मी आफीसर सी. के. सक्सेना, रि.आ.आ. मुकेशकुमार, रि.आ.आ. बलवीर सिंह की उपस्थिति में राष्ट्रीय ध्वज सम्मान, सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, मीडिया कवरेज और भव्य मंच व्यवस्था की गई। सम्मानित प्रतिभागियों को सम्मान-पत्र, ट्रॉफी, राष्ट्रीय पदक एवं आधिकारिक पहचान-पत्र सम्माननीय अतिथियों द्वारा प्रदान किए गये। पिछले वर्षों की सफलता के बाद इस वर्ष कार्यक्रम का स्वरूप और भी व्यापक एवं प्रभावशाली बनाया गया जिससे राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक और रचनात्मक कार्यों को नई पहचान मिल सके। राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026 का आयोजन गणतंत्र दिवस के अवसर पर देशभक्ति, एकता और सामाजिक चेतना के संदेश को और अधिक मजबूत करेगा। अगला समारोह इसी भव्यता के साथ 15 अगस्त-26 को दिल्ली में आयोजित होगा। राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार प्राप्त करने वालों में अथाई मीडिया इंटरनेशनल के डॉ.अखिल बंसल-जयपुर, सुरेन्द्र पाण्डया-जयपुर, शैलेन्द्र जैन-अलीगढ, डॉ. राजीव जैन-आगरा, डॉ. राजीव प्रचण्डिया-अलीगढ, सुरेन्द्र मिश्रा-भोपाल, अजित बंसल-जयपुर, पारस जैन 'पार्श्वमणि'- कोटा, मयंक जैन-अलीगढ, डॉ. रीना सिन्हा-मुंबई तथा डॉ. मीना जैन-उदयपुर प्रमुख थीं।

बैंक को 10 दिन में लौटानी होगी रकम

नई दिल्ली : राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडी-आरसी) ने कहा है कि खाताधारक की गलती या लापरवाही नहीं होने के बावजूद खाते से रकम निकाली गई है तो बैंक को दस दिन में रकम वापस करनी होगी। शीर्ष उपभोक्ता आयोग ने भारतीय रिजर्व बैंक के 2017 के सर्कुलर के प्रावधानों को स्पष्ट करते हुए यह फैसला दिया है। आयोग के अध्यक्ष जस्टिस एपी शाही, सदस्य भरत कुमार पांड्या की पीठ ने एक मामले में बेंगलूरु की महिला खाताधारक के हक मे फैसला देते हुए राज्य उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के फैसले के खिलाफ बैंक की अपील खारिज कर दी।

पंचकल्याणक महोत्सव की तैयारियाँ तेज

नाशिक : सारस्वत आचार्य श्री देवनंदिजी महाराज की प्रेरणा से निर्मित अध्यात्म और वास्तुकला के संगम 'णमोकार तीर्थ' में एक विशाल जैन पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन आगामी फरवरी माह में आयोजित होने वाले भव्य 'अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक महोत्सव' के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम परम पूज्य सारस्वताचार्य प्रज्ञाश्रमण श्री 108 देवनंदिजी महाराज के पावन सान्निध्य एवं मुनिश्री अमोघकीर्ति जी व मुनिश्री अमरकीर्ति जी के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। तीर्थ दर्शन एवं समोशरण का निरीक्षण सम्मेलन का शुभारंभ प्रात:काल तीर्थ क्षेत्र के दर्शन के साथ हुआ। मुनिश्री अमरकीर्ति जी ने उपस्थित पत्रकारों को तीर्थ की अनुपम विशेषताओं से विस्तार से अवगत कराया।

समोशरण रचना के बारे में दी जानकारी : उन्होंने यहाँ निर्मित भव्य 'समोशरण रचना' के आध्यात्मिक महत्त्व को समझाते हुए सभी को इसका बारीकी से निरीक्षण करवाया। दोपहर के सत्र में आचार्य श्री एवं युगल मुनिश्री की उपस्थिति में अखिल भारतीय जैन पत्र संपादक संघ के अध्यक्ष जगदीश प्रसाद जैन महामंत्री डॉ. अखिल बंसल के साथ अन्य सहयोगियों द्वारा गणधाराचार्य कुंथुसागरजी महाराज के चित्र का अनावरण के साथ दीप प्रज्वलन की क्रिया सम्पन्न हुई। पंडित विजयकुमार जैन - मुम्बई के मंगलाचरण के पश्चात, उनके द्वारा ब्राह्मी लिपि में तैयार हस्तलिखित 'भक्तामर ध्वज' एवं विभिन्न भाषाओं में अनुवादित 'णमोकार महामन्त्र पत्रक' का भव्य विमोचन किया गया। संघ के महामंत्री डॉ. अखिल बंसल ने मुनि संघ को संगठन द्वारा प्रकाशित साहित्य भेंट किया। राष्ट्रसंत का संबोधन एवं सम्मान आचार्य श्री देवनंदिजी महाराज ने धर्म प्रभावना के महत्त्व पर जोर देते हुए कहा कि यह तीर्थ भविष्य में शोध का मुख्य केंद्र बनेगा। आपने सभी पत्रकारों को अपने कर्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा देते हुए इस पंचकल्याणक की विशेषताओं से अवगत कराया व सभी को प्रत्यक्ष आकर देखने का आव्हान किया। मुनिश्री अमोघकीर्ति जी ने पत्रकारों को इस पंचकल्याणक महोत्सव को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर देशभर से आए पत्रकारों का शाल, माला और स्मृति चिह्न (मोमेंटो) देकर सम्मान किया गया। सभी पत्रकारों को आगामी आयोजन के आमंत्रण पत्र एवं आलेख सामग्री भी वितरित की गई। महामंत्री डॉ. अखिल बंसल ने संगठन की आवश्कता प्रतिपादित करते हुए अभी तक संगठन द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी देते हुए राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्य मुनि श्री विद्यानंदजी के स्मृति ग्रंथ के प्रकाशन की योजना पर चर्चा की। समारोह में अध्यक्ष जगदीश प्रसाद जैन-आगरा, महामंत्री डॉ. अखिल बंसल-जयपुर, मनोज सोगानी-जयपुर , डॉ. राजीव प्रचण्डिया-अलीगढ़, शैलेश कापडिया-सूरत, डॉ. ममता जैन (महिला प्रकोष्ठ महासचिव) व प्रवीण भण्डारी-पुणे, डॉ. विनोद जैन व डॉ. अल्पना जैन-मालेगांव, डॉ. सुशीला सालगिया-इन्दौर सहित देश के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधि उपस्थित रहे। इस भव्य सम्मेलन की संकल्पना प्रचार-प्रसार समिति के संयोजक पारसजी लोहाड़े द्वारा रखी गई। कार्यक्रम का संचालन विनोद जी पाटणी ने किया और अंत में डॉ. अल्पना जैन (मालेगांव) ने आभार व्यक्त किया। इस सफल आयोजन में णमोकार तीर्थ अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक समिति का विशेष योगदान रहा।

Created by Universal Document Converter

गणतंत्र दिवस पर उ.प्र. के राज्यपाल एवं उप मुख्यमंत्री ने डॉ. सुनील जैन 'संचय' ललितपुर को - 'जैन संस्कृति संवर्द्धन पुरस्कार' से सम्मानित किया

लखनऊ : 26 जनवरी 2026 को गणतंत्र दिवस एवं उत्तर प्रदेश स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर उत्तर प्रदेश की महामहिम राज्यपाल महोदय श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी एवं उप मुख्यमंत्री माननीय श्री ब्रजेश पाठक जी ने डॉ. सुनील जैन संचय (ललितपुर) को 'जैन संस्कृति संवर्द्धन सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उत्तर प्रदेश जैन विद्या शोध संस्थान, संस्कृति मंत्रालय, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 के लिए प्रदान किया गया। अलंकरण समारोह का आयोजन गांधी सभागार, जन भवन (राजभवन) लखनऊ में किया गया। महामहिम राज्यपाल महोदय ने डॉ. सुनील जैन संचय को प्रशस्ति पत्र, सम्मान राशि इक्यावन हजार रुपए का चेक एवं शाल भेंट कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें जैन संस्कृति, दर्शन, साहित्य एवं शोध के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय एवं सतत योगदान के लिए प्रदान किया गया। इस अवसर पर अमृत अभिजात (आईएएस) प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय उत्तर प्रदेश सरकार, अमित कुमार अग्निहोत्री निदेशक, अपर मुख्य सचिव डॉ. सुधीर बोबडे, प्रो. अभय कुमार जी उपाध्यक्ष उ.प्र. जैन विद्या शोध संस्थान सहित अनेक जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी, गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। राजभवन के जन भवन में आयोजित इस अलंकरण समारोह में महामहिम राज्यपाल एवं उप मुख्यमंत्री ने प्रदेश के कला, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाली विशिष्ट विभूतियों को सम्मानित किया। समन्वय वाणी परिवार द्वारा हार्दिक बधाई व शुभकामनायें।

छात्रों का पुरस्कार देकर किया सम्मानित

जयपुर : श्रीमहावीर दिगंबर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय, महावीर पब्लिक स्कूल, श्रीमहावीर कॉलेज, श्रीपद्मावती जैन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय एवं पद्मावती पब्लिक स्कूल के संयुक्त तत्त्वाधान में 77वाँ गणतंत्र दिवस मनाया गया। मुख्य अतिथि न्यायाधिपति चंद्र प्रकाश श्रीमाली रहे। अध्यापिकाओं ने वंदेमातरम् गीत प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट, देशभक्ति गीत एवं नृत्य, योगा प्रदर्शन, आत्म सुरक्षा प्रदर्शन, स्केटिंग प्रदर्शन आदि खूब तालियाँ बटोरीं। इस दौरान सहशैक्षिक गतिविधियों में उपलब्धि प्राप्त छात्रों को पुरस्कार वितरित किए गए।

सम्पादक : डॉ. अखिल बंसल, जयपुर
संयुक्त सम्पादक : डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन 'भारती', सनावद
सह सम्पादक : श्रीमती शैल बंसल जयपुर एवं सुरेन्द्र पाण्डया जयपुर
प्रबंध सम्पादक : अनिल पारसदास जैन दिल्ली एवं अंशुल जैन जयपुर

कृपया आप अपना चैक समन्वयवाणी के नाम से पंजाब नेशनल बैंक में खाता सं. 2263002100000749 में जमा कराकर सूचित करें।
IFSC Code - PUNB0226300

Email : samanvayvani@gmail.com

स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती शैल बंसल के लिए बाहुबली प्रिन्टर्स 129, जादोन नगर 'बी' स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से मुद्रित तथा प्रकाशित। मो. 9929655786

भगवान नेमिनाथ की प्रतिमाएँ एवं आचार्य चरण कमलों की विधिपूर्वक स्थापना

पटना : बिहार की राजधानी पटना के गुलजारबाग में महामुनि सेठ सुदर्शन स्वामी की निर्वाण भूमि श्री कमलदह जी दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र में सोमवार, दिनांक 26 जनवरी, 2026 को आस्था, भक्ति एवं उल्लास से परिपूर्ण एक ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। मंदिर के नवनिर्मित भव्य शिखर पर भगवान नेमिनाथ स्वामी की प्रतिमाओं एवं पूज्य जैनाचार्यों के चरण कमलों की विधि-विधानपूर्वक स्थापना की गई। उल्लेखनीय है कि ये प्रतिमाएँ हाल ही में 21 से 25 जनवरी 2026 को श्री पावापुरी जी सिद्ध क्षेत्र में आयोजित 'श्री मज्जिनेन्द्र चौबीसी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव' के दौरान प्रतिष्ठित की गई थीं, जिन्हें 26 जनवरी 2026 को शुभ मुहूर्त में पूर्ण पवित्रता के साथ कमलदह जी तीर्थ में विराजमान किया गया। प्रतिष्ठा विधि का संचालन अम्बाह (मुरैना) से पधारे सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य पं. मुकेशजी शास्त्री द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार एवं शास्त्रीय विधि-विधान से किया गया। मंदिर के नवनिर्मित गगनचुंबी शिखर पर भगवान नेमिनाथ स्वामी की कमल सहित चार भव्य प्रतिमाएँ चारों दिशाओं में स्थापित की गई हैं, जो दूर से ही श्रद्धालुओं को शांति और आध्यात्मिक चेतना का संदेश प्रदान करेंगी। वहीं जिनालय की छत पर निर्मित कलात्मक छतरियों में पाटलिपुत्र के इतिहास से सम्बन्ध रखने वाले पूज्य जैनाचार्यों (अंतिम श्रुत केवली आचार्य भद्रबाहु स्वामी, तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता आचार्य उमास्वामी, मगध सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य जो बाद में जैन मुनि दीक्षा लेकर विशाखाचार्य बन गए एवं सदी के प्रथम आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी) के चरण चिन्हों की स्थापना से यह स्थल अब गुरु-भक्ति का भी अनुपम केन्द्र बन गया है। इस अवसर पर बिहार स्टेट दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी के मानद मंत्री श्री पराग जैन ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह दिन पटना के जैन समाज के लिए अत्यंत सौभाग्यपूर्ण है, कमलदह जी क्षेत्र का यह बहुप्रतीक्षित कार्य आज गुरुओं के आशीर्वाद से साकार हुआ है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए आस्था का सशक्त केंद्र बनेगा। कार्यक्रम के समापन पर उन सभी सौभाग्यशाली परिवारों एवं श्रद्धालुओं का सम्मान किया गया जिन्होंने प्रतिमा एवं चरण विराजमान कराने का पुण्य लाभ प्राप्त किया। इस संबंध में जानकारी देते हुए प्रबंधक सोनू कुमार जैन ने बताया कि इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से जैसे गुजरात महाराष्ट्र बिहार तथा झारखंड से जैन श्रद्धालु पटना पहुंचे। स्थापना के पश्चात् मंदिर की भव्यता एवं आध्यात्मिक ऊर्जा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस महोत्सव ने धार्मिक परंपराओं के साथ-साथ समाज में एकता, भक्ति और संस्कारों के बंधन को और सुदृढ़ किया। पूरे वातावरण में 'भगवान नेमिनाथ की जय' के जयघोष गूंजते रहे।

- रवि कुमार जैन, राजगीर

पूर्व न्यायाधीश पानाचंद जैन का निधन

जयपुर : हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश पानाचंद जैन का 27 जनवरी को निधन हो गया है, वे 99 वर्ष के थे। वे लंबे समय से बीमार थे। उन्होंने अस्पताल में अंतिम सांस ली। जैन संस्कृति रक्षा मंच के संरक्षक के साथ आप अनेक संस्थाओं से जुडे थे। दै. राष्ट्रदूत में अतिथि संपादक के रूप में आपकी ख्याति रही है। समन्वय वाणी ने अपना सच्चा हितैषी खो दिया है। समन्वय वाणी परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित।

Created by Universal Document Converter